B-2
L-17
Modern
India

# क्रांतिकारी राष्ट्रवाद

## महत्वपूर्ण बिन्दु

(i) क्रांति का सामान्य अर्थ नियत समय में व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन करना होता है किन्तु व्यापक अर्थों में परिवर्तन के साथ ही प्रगति, पुनरुत्थान व सुशासन भी क्रांति के महत्वपूर्ण आयाम बन जाते हैं।

(ii) क्रांति हिंसा को अंतिम स्तर मानती है और वैसे भी क्रांति में हिंसा आवश्यक नहीं होती जैसे कि वैज्ञानिक या आर्थिक क्रांति में। किन्तु जब सत्ता परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी विरोध किया जाता है तो क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हिंसा स्वाभाविक हो जाती है।

(iii) भगतसिंह के शब्दों में, "क्रांति बम और

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

पिस्तौल से नहीं आती, बल्कि क्रांति की तलवार तो विचारों की शान पर तेज होती है।"

(iv) क्रांति दोषी व अन्यायी प्रशासकों के विरुद्ध ही हिंसा का समर्थन करती है हालांकि दूसरी तरफ आतंक हिंसा को सर्वोपरि मानता है और अत्यधिक हिंसा के माध्यम से ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया जाता है कि अपनी अनुचित मांगें भी मनवायी जा सकें और आतंकी दोषी व निर्दोषी में फर्क नहीं करते और आधुनिक संदर्भ में सामान्यतः आतंक को विदेशों से समर्थित माना जाता है।

(v) भारतीय क्रांतिकारिता के बारे में दो मिथक प्रचलित रहे हैं:-

a) यह विदेशों से प्रेरित थी

b) क्रांतिकारी गतिविधियां भारत में तब और

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रसारित हुई जब ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध कोई बड़ा आंदोलन नहीं चलाया जा रहा था।

(vi) आधुनिक इतिहास लेखन इन दोनों मिथकों को अस्वीकृत करता है और यह मानता है कि क्रांति की परम्परा भारत में प्राचीनकाल से रही है यद्यपि विदेशों की क्रांतिकारी गतिविधियों ने उत्प्रेरक का कार्य अवश्य किया और साथ ही भारतीय क्रांतिकारिता कोई आकस्मिक घटना न होकर हमारे स्वतंत्रता संग्राम की एक सतत् प्रक्रिया का हिस्सा है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

## प्रथम चरण की क्रांतिकारी गतिविधियां

20 वीं सदी के प्रारंभिक दशक में हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को क्रांतिकारी गतिविधियों ने एक नया आयाम दिया जिसे मुख्यतः युवाओं ने अपनाया, इसकी पृष्ठभूमि निम्नलिखित तत्वों ने तैयार की:-

(i) भारत में उदारवादी रणनीति जब अपेक्षित अधिकार न दिला पायी तो उग्रवाद भी आशानुरूप सफलता न दिला सकता तो एक नए विकल्प के रूप में युवाओं ने क्रांतिकारी गतिविधियों को अपनाया। जिसे 1905 के बंगाल विभाजन के निर्णय ने और ऊर्जा प्रदान की।

(ii) इसी समय आयरलैण्ड, तुर्की व इटली जैसे देशों में क्रांतिकारी गतिविधियां लोकप्रिय होने लगी थी और इटली के दार्शनिक 'मेजिनी' के शब्द भारतीय युवाओं को प्रेरित कर रहे थे, "यदि किसी देश के वास्तविक चरित्र को समझना है तो वहां के युवाओं का क्रांति के प्रति उत्साह अवश्य देखा जाना चाहिए।"

(iii) भारत के सामाजिक- धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीयों की बौद्धिक जड़ता को झकझोर दिया और विवेकानंद जैसे विचारकों ने जब सम्पूर्ण

विश्व में भारतीय दर्शन की गरिमा को पुनर्स्थापित किया और संदेश दिया कि, "सत्य ही जीवन है और कायरता मृत्यु के समान है।" इन शब्दों ने भारतीय युवाओं को व्यक्तिगत शौर्य व पराक्रम की तरफ आकर्षित किया और इन्होंने क्रांति का मार्ग चुना।

## क्रांतिकारी गतिविधियों का स्वरूप / रणनीति

(i) युवाओं ने यह आंकलन किया कि अंग्रेज भारत का निरंतर शोषण इसीलिए करते जा रहे हैं कि उनका यहां सक्रिय विरोध नहीं किया जाता। इसीलिए भारतीयों के मामले में ब्रिटिश प्रशासक अन्यायपूर्ण व शोषणपूर्ण कार्यवाही का निर्णय देते हैं। अतः इन युवाओं ने "बम व पिस्तौल" की रणनीति को अपनाया और यह भावना प्रसारित करने का प्रयास किया कि भारतीयों के प्रति अन्यायपूर्ण कार्यवाही को

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

अब सहन नहीं किया जाएगा।

(ii) इसी संदर्भ में चापेकर बंधुओं ने पूना में प्लेग समिति के अध्यक्ष रैण्ड व प्रशासनिक अधिकारी एयर्हस्ट की हत्या कर दी तो इसरी तरफ खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने मुजफ्फरपुर के बदनाम न्यायाधीश किंग्सफोर्ड के काफिले पर बम फेंका।

(iii) ये क्रांतिकारी तात्कालिक उद्देश्यों से प्रेरित थे, ये वर्तमान में जीते थे और इनके पास अविष्य की कोई योजना नहीं थी इनका एकमात्र उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता को भारत से उखाड़ फेंकना था और इसके लिए वे त्याग और बलिदान को महत्वपूर्ण मानते थे।

(iv) क्रांतिकारिता से युवाओं को जोड़ने के लिए प्राचीन सांस्कृतिक व धार्मिक तत्वों का प्रयोग

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

किया गया, जिससे युवाओं में बलिदानी भावना को मजबूत हुई किन्तु इसका एक नकारात्मक पक्ष यह रहा कि प्रथम चरण की क्रांतिकारी गतिविधियों में मुस्लिम वर्ग की सहभागिता नगण्य रही।

(v) क्रांतिकारियों ने अपनी गतिविधियों के संचालन के लिए गुप्त संस्थाओं व समितियों का गठन किया। इसी संदर्भ में बंगाल में अनुशीलन समिति तो वहीं महाराष्ट्र में अभिनव भारत जैसी संस्थाएं स्थापित हुई तथा क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रसारित करने के लिए युगान्तर व संध्या जैसे पत्र निकाले गए तथा भारतीय क्रांतिकारिता पर पहली पुस्तक 'भवानी मंदिर' बारीन्द्र घोष द्वारा लिखी गयी।

(vi) प्रथम चरण की भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियों में क्षेत्रीयता का भाव शामिल था। महाराष्ट्र,

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

पंजाब एवं बंगाल में अलग - अलग कारणों से प्रशासनिक अधिकारियों के दुर्व्यवहार व शोषण से असंतुष्ट युवाओं ने क्रांति को अपनाया इसीलिए इनकी गतिविधियां क्षेत्रीय स्तर पर अधिक लोकप्रिय रही।

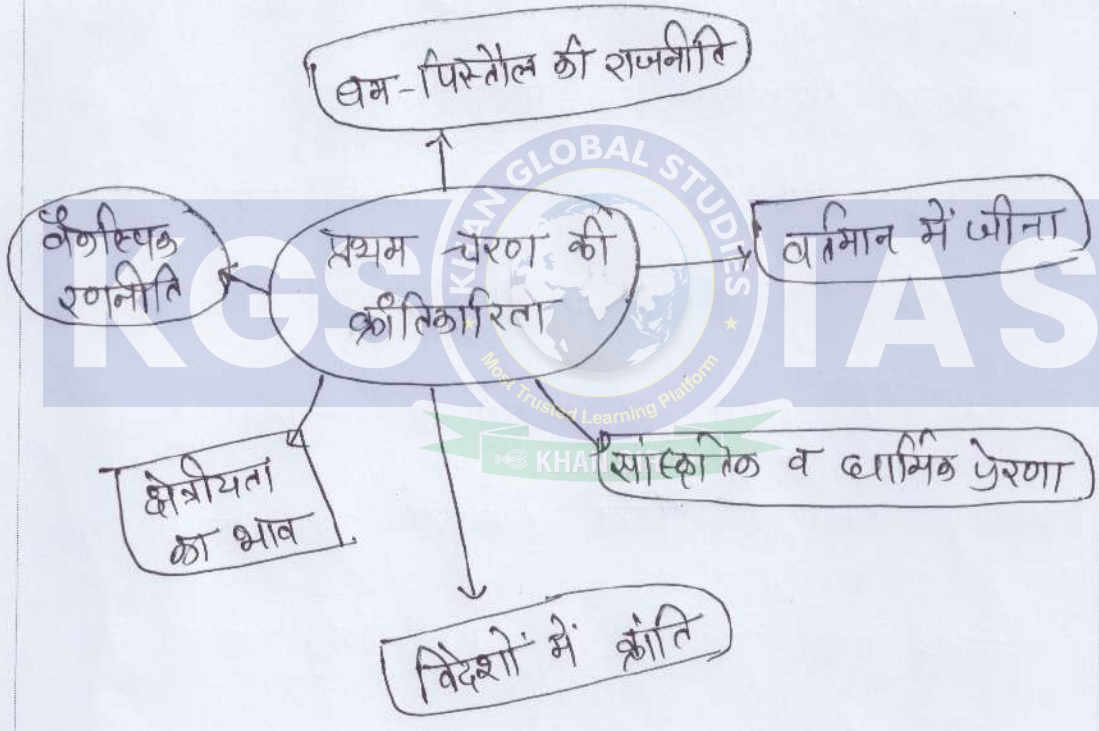


## विदेशों में भारतीय क्रांतिकारिता

(i) 20 वीं सदी के प्रथम चरण की क्रांतिकारी राष्ट्रवादिता एक नए आयाम से तब जुड़ गयी

RGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

जब विदेशों में भी भारतीय क्रांतिकारिता की मशाल जलायी गयी, जिसने हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को एक नयी ऊँचाई दी।

(ii) वस्तुतः विदेशों में रह रहे भारतीयों के मन में यह भावना मजबूत होने लगी थी कि विदेशी सरकार उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार इसीलिए करती है कि हमारा देश गुलाम है अतः अपने देश के साथ आत्मिक लगाव के साथ ही अपनी स्थिति में सुधार के लिए भी विदेशों में भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियां लोकप्रिय होने लगी और यह किसी एक क्षेत्र या देश में सीमित न होकर वैश्विक रूप लेने लगा था।

(a) लंदन में श्यामजी कृष्णवर्मा ने इण्डिया हाउस की स्थापना की जो ब्रिटेन में

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

भारतीय क्रांतिकारियों को संगठित करने का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया।

इस संस्था ने क्रांतिकारी विचारों को प्रसारित करने व नवयुवकों को क्रांति का प्रशिक्षण देने के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान की। सावरकर व मदनलाल ढींगरा जैसे क्रांतिकारी इसी संस्था से जुड़े थे।

b) फ्रांस में मैडम भीखाजी कामा ने विदेशों में रह रहे भारतीयों के बीच समन्वयक की भूमिका निभायी और विदेशों में भारतीय क्रांतिकारिता को संगठित रूप देने का प्रयास किया।

जर्मनी के स्टुटगार्ट समाजवादी सम्मेलन में मैडम कामा ने भारतीयों की दुर्दशा को संवेदनशीलता से रखकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारतीयों के अधिकारों की मांग को महत्वपूर्ण

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Platform KHAN SIR

बना दिया।

ⓒ विदेशों में भारतीय क्रांतिकारिता का क्रांतिकारी संगठन बना गदर आंदोलन। 1913 में लाला हरदयाल के नेतृत्व में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी की स्थापना की गयी। इसके अधिकांश सदस्य प्रवासी पंजाबी मूल के थे यद्यपि हिन्दू और मुस्लिम वर्ग की भागीदारी भी महत्वपूर्ण थी और भारतीय क्रांतिकारिता की तरह इन्होंने भी अपना संबोधन वाक्य "वंदे मातरम्" को ही चुना।

गदर ने सशस्त्र विद्रोह के द्वारा ब्रिटिश सत्ता के उन्मूलन की रणनीति बनायी और भारतीय क्रांतिकारियों से निरंतर सम्पर्क बनाए रखा क्योंकि इन्हें यह ज्ञात था कि अंतिम संघर्ष तो भारत में ही होना है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

अतः क्रांति की भावना को उत्साहित करने के साथ ही युवाओं को क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षण देना तथा धन व हथियार उपलब्ध करवाकर पंजाब से सशस्त्र विद्रोह आरंभ कर भारत की आजादी का लक्ष्य रखा गया।

शीघ्र ही गदर इतना लोकप्रिय हो गया कि ब्रिटिश सरकार चिंतित हो उठी किंतु मुख्यतः तीन घटनाओं के कारण गदर आंदोलन शिथिल होता गया-

(i) प्रथम विश्व युद्ध का आरंभ

(ii) लाला हरदयाल की गिरफ्तारी

(iii) कामागाटामारु नामक जहाज की घटना

(iv) विदेशों में इन क्रांतिकारी घटनाओं के साथ ही यूरोप एवं एशिया के अन्य क्षेत्रों में भी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियां होती रही जो स्पष्ट कर देता है कि अब विदेशों में रह रहे भारतीयों के मन में भारत की आजादी के लिए एक अदितीय भावना पैदा हो चुकी थी। यद्यपि प्रथम चरण की क्रांतिकारिता अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रही और ब्रिटिश सत्ता ने क्रांतिकारी गतिविधियों का बड़ी ही निर्ममता से दमन कर दिया। किन्तु यह भी सत्य है कि इन क्रांतिकारियों ने देश-भक्ति की उस अखंड ज्वाला का संचालन कर दिया जिससे हमारा राष्ट्रीय संघर्ष प्रखर हो उठा और आजादी के लिए शौर्य, पराक्रम, स्वाभिमान जैसी प्रवृत्तियां हमारे राष्ट्रीय संघर्ष का अंग बन गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रश्नः- प्रथम चरण के भारतीय क्रांतिकारी, जिन्हें प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने भटका हुआ देशभक्त कहा, अपने उद्देश्यों में किस सीमा तक सफल माने जा सकते हैं? (150शब्द)

विशेष

- काबुल में राजा महेन्द्रप्रताप के नेतृत्व में राष्ट्रीय समानांतर सरकार की स्थापना की गयी जिसके प्रधानमंत्री बरकतुल्लाह बनाए गए।
- भारतीय सीमा के समीप इस सरकार की स्थापना को ब्रिटिश सत्ता के लिए प्रबल चुनौती माना गया।
- इसी दौर में "सिल्क पेपर षड्यंत्र" की घटना भी लोकप्रिय हुई। वस्तुतः जब प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी, आस्ट्रिया व तुर्की जैसे देश ब्रिटेन व मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ रहे थे तो यह योजना बनायी गयी कि जर्मनी व तुर्की की मदद से अफगानी कबाइलियों को लेकर एक

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN Sir

सशस्त्र युद्ध के द्वारा अंग्रेजों को भारत से बाहर भगा दिया जाए।

इसी संदर्भ में अब्दुल्ला हसन एवं मोहम्मद सिंधी के बीच इस रणनीति को सिल्क पेपर पर लिखकर योजना को क्रियान्वित करने का कोड भाषा में संदेश भेजा जा रहा था किंतु दुर्भाग्यवश यह पत्र अंग्रेजों के पक्ष में आ गया जिससे सशस्त्र युद्ध की योजना ध्वस्त हो गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR